Quick word tests

तरक़्क़ी	तरक़्क़ी
ज़्यादा	ज़्यादा
मन्ज़ूर	मन्ज़ूर
इलेक्ट्रान	इलेक्ट्रान
स्ट्रीटकार	स्ट्रीटकार
छुट्टी	छुट्टी
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र
ज्येष्ठ	ज्येष्ठ
दृष्टांत	दृष्टांत
चिट्ठी	चिट्ठी
वाङ्मय	वाङ्मय
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
पुनस्स्थापना	पुनस्स्थापना
स्वास्थ्य	स्वास्थ्य
कम्प्यूटर	कम्प्यूटर
सान्ध्य	सान्ध्य
इज़्ज़त	इज़्ज़ात
उज्ज्वल	उज्ज्वल
प्राप्त्याशा	प्राप्त्याशा
इकत्तीस	इकत्तीस
सत्रह	सत्रह
पद्म	पद्म
विद्यार्थी	विद्यार्थी
उन्नीस	उन्नीस
पश्चिम	पश्चिम
श्रीलंका	श्रीलंका
विश्वविद्यालय	विश्वविद्यालय
स्नान	स्नान
बुद्ध	बुद्ध
आह्लाद	आह्लाद
ब्राह्मण	ब्राह्मण
मिस्त्री	मिस्त्री
दुष्प्रह्य	दुष्प्रह्य
अद्भुत	अद्भुत
इल्ज़ाम	इल्ज़ाम
अक्षरे	अक्षरे
ज्ञान	ज्ञान
मौके	मौके
कैंटोमेंट	कैंटोमेंट
छूट कुछ	छूट कुछ
करेंट	करेंट
राष्ट्रून	राष्ट्रून
कॉफी	कॉफी
हिंदू-मुस्लिम	हिंदू-मुस्लिम
करणाऱ्या	करणाऱ्या
स्नेह	स्नेह
श्री	श्री
स्त्री	स्त्री
ध्ह्यां	ध्ह्यां
शक्ति	शक्ति
महाराष्ट्र	महाराष्ट्र
कट्टू	कट्टू
रूप	रूप
हूँ	हूँ
बुत्तो	बुत्तो
बार्गी	बार्गी
कुंग	कुंग
हूप	हूप
फ्रीज	फ्रीज
ह्रितिक	ह्रितिक
एल्ज़े	एल्ज़े
उत्त्य	उत्त्य
उत्य	उत्य
रत्न	रत्न
सज़्स	सज़्स
एज्ज्ञा	एज्ज्ञा
ब्यर्थै	ब्यर्थै
तरक़्क़ी	तरक़्क़ी
फ्रैक्चर	फ्रैक्चर
डॉक्टर	डॉक्टर
इलेक्ट्रॉन	इलेक्ट्रॉन
रक्त	रक्त
वक्त्र	वक्त्र
युक्त्यभास	युक्त्यभास
वक़्फ़	वक़्फ़
शुक्ल	शुक्ल
रिक्शा	रिक्शा
पक्ष	पक्ष
लक्ष्मी	लक्ष्मी
अभक्ष्य	अभक्ष्य
दिक्स्थापन	दिक्स्थापन
सख़्त	सख़्त
अख्त्यार	अख्त्यार
ज़ख़्म	ज़ख़्म
ख्रिष्टां	ख्रिष्टां
फ़ख़	फ़ख़
अग्ग्रास	अग्ग्रास
मग्ज़	मग्ज़
सम्यग्ज्ञान	सम्यग्ज्ञान
दिग्दर्शन	दिग्दर्शन
पंक्ति	पंक्ति
मंगलवार	मंगलवार
दुर्लंघ्य	दुर्लंघ्य
पच्चीस	पच्चीस
अच्छा	अच्छा
उज्र	उज़्र
संस्कृत	संस्कृत
हिंस्र	हिंस्र
छुट्टी	छुट्टी
चिट्ठी	चिट्ठी
विशाखपट्नम	विशाखपट्नम
ट्रैन	ट्रैन
सुपाठ्य	सुपाठ्य
लड्डू	लड्डू
ब्रह्मण्य	ब्रह्मण्य
उत्क्रम	उत्क्रम
उत्क्षेप	उत्क्षेप
विद्युत्प्रहक	विद्युत्प्रहक
महत्त्व	महत्त्व
पत्थर	पत्थर
विद्युत्दर्शी	विद्युत्दर्शी
पत्नी	पत्नी
सपत्न्य	सपत्न्य
उत्प्रवास	उत्प्रवास
त्याहिक	त्र्याहिक
विद्युतशक्ति	विद्युतशक्ति
हृत्स्थल	हृत्स्थल
ज्योत्स्ना	ज्योत्स्ना
ईषत्स्पृष्ट्	ईषत्स्पृष्ट्
उत्स्रुत	उत्स्रुत
सद्गति	सद्गति
सद्ग्रन्थ	सद्ग्रन्थ
उद्घाटन	उद्घाटन
ज़िद्दी	ज़िद्दी
प्रसिद्ध	प्रसिद्ध
उद्बोध	उद्बोध
द्रव	द्रव
दारिद्र्य	दारिद्र्य
अध्रुव	अध्रुव
मंज़ूर	मंज़ूर
मंत्री	मंत्री
स्वातंत्र्य	स्वातंत्र्य
द्वंद्व	द्वंद्व
उन्नीस	उन्नीस
इंस्टिट्यूट	इंस्टिट्यूट
उन्हें	उन्हें
दीन्ह्यो	दीन्ह्यो
नैप्स्यून	नैप्स्यून
प्राप्त	प्राप्त
सब्ज़ी	सब्ज़ी
छब्बीस	छब्बीस
मार्किट	मार्किट
दुर्ज्ञेय	दुर्ज्ञेय
उर्दू	उर्दू
निर्द्वन्द्व	निर्द्वन्द्व
सिर्फ	सिर्फ
व्हिस्की	व्हिस्की
इश्क़	इश्क़
प्रश्न	प्रश्न
रुश्द	रुश्द
वैशिष्ट्य	वैशिष्ट्य
ओष्ठ्य	ओष्ठ्य
मिस्त्री	मिस्त्री
आह्वान	आह्वान
आह्लाद	आह्लाद
ह्रास	ह्रास
अंकुड़ा	अंकुड़ा
अंतर्निहित	अंतर्निहित
अन्तः	अन्त:
अंतर्वेशन	अंतर्वेशन
अग्नि	अग्नि
अद्भुत	अद्भुत
छुछुंदर	छुछुंदर
हुंकार	हुंकार
हित इच्छुक	हित इच्छुक
कुर्री	कुर्री
कुल्हिया	कुल्हिया

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।। अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

चक्रव्यूह से निकालती है गीता

जीवन में जब भी संकट आता है, गीता में श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश हमें इस चक्रव्यूह से बाहर निकालने का रास्ता दिखाता है। गीता जयंती (2 दिसंबर) पर चिंतन...

मद्गवद्गीता के अध्याय 16 के श्लोक 24 में कहा गया है - तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ अर्थात तेरे लिए इस कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। यानी हमारे कार्य-व्यवहार को शास्त्र सही राह दिखाते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता भी शास्त्र है, जो हमें जीवन के चक्रव्यूह से बाहर निकालती है।

आप जब भी हवाई जहाज की यात्रा करते हैं तो आपको हमेशा विमान परिचारिका विमान उड़ने से पहले कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं देती है। उन सूचनाओं में सबसे प्रमुख है कि विमान में कितने निकास द्वार अर्थात एक्जिट डोर हैं। भले ही आपने जीवन में कई बार हवाई यात्राएं की होंगी, फिर भी हर बार आपको सुरक्षा नियम बताए जाते हैं। आपने शायद एक बार भी उन निकास द्वारों का प्रयोग न किया हो, परंतु आपातकाल में उनका प्रयोग करने की सलाह दी जाती है। इसी तरह जीवन की उड़ान में भी हमारे पास एक्जिट पॉलिसी अर्थात निकास पद्धति होनी ही चाहिए।

आमतौर पर आप अपनी कार का, घर का तथा घर की वस्तुओं का भी बीमा कराते हैं, क्योंकि आप चाहते हैं कि इन वस्तुओं को कोई नुकसान न पहुंचे, परंतु अगर कुछ हो भी जाए तो आप नुकसान के उस

झटके को सहने में सक्षम हो सकें। हम बात कर रहे हैं दुख झेलने की उस क्षमता की, जो दुख के आने से पहले हमारे भीतर पैदा हो जाती है। दुख अगर बताकर आए तो सहना आसान है, परंतु यदि एकदम आ जाए तो मुश्किल आ जाती है। उदाहरण के लिए, यदि आपको मालूम हो कि कल सप्लाई का पानी नहीं आएगा, तो आप अपने आपको इसके लिए तैयार कर सकते हैं, पर अगर बिना सूचना के अचानक पानी चला जाए तो उसे झेलना काफी मुश्किल हो जाता है। आर्थिक समस्याओं के लिए तो हम अक्सर तैयार रहते हैं, शारीरिक स्तर पर भी हम कुछ हद तक स्वयं को सक्षम बना लेते हैं, पर प्रहार जब मन पर होता है तो हमारे पास कोई भी एक्जिट पॉलिसी अर्थात उस समस्या से निकलने का द्वार नजर नहीं आता। ऐसे में हम उन लोगों की शरणागति जाते हैं जो ख़ुद अपनी समस्याओं में उलझे हुए होते हैं। किसी शायर ने कहा है, 'थामा था उनका हाथ जो ख़ुद ढूंढते थे सहारा। इसीलिए कहा जाता है कि जब भी आप खुद को संकट की स्थिति में पाएं, तो शास्त्रों का सहारा लीजिए। जब किसी शब्द की स्पेलिंग या अर्थ पर आप अटकते हैं तो शब्दकोश की शरण में जाते हैं, फिर शब्दकोश में जो भी लिखा हो उसको आप अक्षर-अक्षर स्वीकार करते हैं।

हमारा जीवन एक तरह का महाभारत ही है और हम सब इसमें अभिमन्यु की तरह हैं, जिसे कठिनाइयों के चक्रव्यूह में आना तो आता है, पर निकलना नहीं आता। इस जीवन के चक्रव्यूह से निकलना तथा निकालना आता है भगवान कृष्ण की वाणी गीता को, परंतु आज हम गीता से बहुत दूर चले गए हैं।

ताजा खबरें, फोटो, वीडियो व लाइव स्कोर देखने के लिए क्लिक करें m.jagran.com पर

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

सेंसेक्स, निफ्टी ठिठके, मिडकैप-स्मॉलकैप में उछाल

बैंक खाते से ज्यादा पैसा निकालने पर देना होगा टैक्स!

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

रंग लाई पीएम मोदी की मेहनत, चीन से आया तोहफा

पेट्रोल, डीजल पर उत्पाद शुल्क बढ़ा, नहीं बढ़ेंगे दाम

मोदी के दीवाने हुए दुनियाभर के निवेशक

बीड़ी-सिगरेट पर अब नहीं होगी सख्ती

पर्सन ऑफ द ईयर की दौड़ में मोदी फिर अव्वल

स्वागत के दौरान राहुल के सामने लगे 'प्रियंका-प्रियंका' के नारे

कंस्ट्रक्शन क्षेत्र को मिलेगा विदेशी पूंजी का टॉनिक

उप्र में अंधेरा दूर करने के लिए ताक पर राजनीति

कर्नाटक व गुजरात में दो अबोध बच्चियों से दुष्कर्म

119 देशों के बच्चों ने UAE का राष्ट्रगान गाकर बनाया रिकॉर्ड

केवल 6 सेकेंड में 'आउट ऑफ स्टॉक' हुआ जियाओमी रेडमी नोट

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगा-पिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

चीनी एपल कही जाने वाली कंपनी जियाओमी का पहला फैबलेट 'जियाओमी रेडमी नोट' आज पहली बार ऑनलाइन साइट फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था जिसका नतीजा यह हुआ कि केवल 6 सेकेंड में सारे हेंडसेट बिक गए।

आज दोपहर ठीक 2 बजे सेल शुरू होने के 6 सेकेंड में ही पूरे 50,000 जियाओमी रेडमी नोट हेंडसेट बिक गए जिसके बाद फ्लिपकार्ट पर 'आउट ऑफ स्टॉक' का मेसेज आने लगा।

जियाओमी के इससे पहले भारत में आए डिवाइस एमआई3 और रेडमी 1एस स्मार्टफोन की तरह ही जियाओमी रेडमी नोट ने भी अपनी पहले सेल में एक रेकार्ड कायम किया है।

जियओमी रेडमी नोट की विशेषताएं

रेडमी नोट में 5.5 इंच का डिस्प्ले है जो कि 720x1280 पिक्सल का रेजोल्यूशन प्रदान करने में सक्षम है। कंपनी द्वारा डिस्प्ले को कॉर्निंग गोरिल्ला ग्लास3 की सुरक्षा भी दी गई है। इसके अलावा इसमें 1.7 गीगा हर्ट्ज मीडियाटेक ऑक्टा-कोर एमटी 6992 प्रोसेसर, माली-420 जीपीयू, 2जीबी रैम, 3,100 एमएएच की बैटरी, 8 जीबी का इंटरनल स्टोरेज व तस्वीरें लेने के लिए 13 मेगापिक्सल का रियर और 5 मेगापिक्सल का फ्रंट कैमरा है।

जियओमी रेडमी नोट भारतीय बाजार में दो वेरिएंट- डुअल सिम (2जी + 3जी) और सिंगल सिम (4जी कनेक्टिविटी) वेरिएंट में आया है जिसमें से आज केवल डुअल सिम वेरिएंट को ही फ्लिपकार्ट पर बिक्री के लिए उतारा गया था।

पढ़े - भारत आया वनप्लस वन स्मार्टफोन, जानिए फीचर्स

तीन मिररलेस कैमरे के साथ आया निकॉन

Publish Date:Mon, 01 Dec 2014 10:12 AM (IST) | Updated Date:Mon, 01 Dec 2014 11:35 AM (IST)

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

नई दिल्ली। निकॉन ने 1 सीरीज के कैमरे- निकॉन 1 एडब्ल्यू1, निकॉन 1 वी3 और निकॉन 1 जे4 को किट लेंसेज के साथ क्रमश: 39,950 रुपये, 43,950 रुपये और 24,950 रुपये में लांच किया है। इन तीन कैमरों में से वी3 और जे4 की घोषणा इस साल के मार्च और अप्रैल माह में की गयी थी जबकि एडब्ल्यू1 की घोषणा सितंबर, 2013 में ही कर दी गयी थी। इन तीनों कैमरे की बिक्री इस माह के अंत तक शुरू कर दी जाएगी। निकॉन के अनुसार एडब्ल्यू 1 दुनिया का पहला वाटरप्रूफ और शॉकप्रूफ मिररलेस कैमरा है। इसमें 14.2 मेगापिक्सल सीएएक्स-फार्मेट सीमॉस सेंसर और उच्च क्वालिटी के इमेज के लिए निकॉन का एक्सपीड 3ए इमेज प्रोसेसिंग इंजन लगा है। साथ ही इसमें वाइड आइएसओ रेंज [164 से 6400] लगा है जिससे किसी भी तरह की रोशनी में अच्छी तस्वीरें आ सकती हैं। यह कैमरा निकॉन के एडवांस हाइब्रिड ऑटोफोकस सिस्टम के साथ आया है, जो आपके मूविंग एक्शन को कैप्चर कर सकता है। 11-27.5मिमी एफ/3.5-5.6 किट के साथ आने वाले निकॉन 1 एडब्ल्यू1 की कीमत 39,950 रुपये रखी गयी है। दूसरा कैमरा है निकॉन वी3 जो काफी हल्के वजन का है। 1वी3 में एक्सपीड 4ए इमेज प्रोसेसर के साथ 18.4 एमपी सी-एक्स फार्मेट सीमॉस सेंसर है। इसका आइएसओ रेंज 160 से 12,800 है। इसमें हाइब्रिड एफ सिस्टम लगा है जिसमें 171 कंट्रास्ट-डिफेक्ट एफ प्वाइंट और 105 फेज डिटेक्ट एफ प्वाइंट है। 10-30 मिमी पीडी लेंस किट के साथ आने वाले इस कैमरे की कीमत 43,950 रुपये है। निकॉन 1 जे4 में 1 इंच का 18.4एमपी सीएक्स फार्मेट सेंसर है। निकॉन 1 जे4 में लगा हाइब्रिड एफ सिस्टम इसकी क्वालिटी में इजाफा करता है। 10-30 मिमी पीडी लेंस के साथ काले और सफेद रंग में यह कैमरा 24,950 रुपये में उपलब्ध है।

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत

बेंगलुरू। आइपीएल-7 फाइनल में जीत के बाद इस टीम के सभी खिलाड़ी जश्न में डूबे दिखे, आखिर ये उनका दूसरा खिताब जो है वहीं अगर टीम के सबसे सफल गेंदबाज व टूर्नामेंट में 21 विकेट लेकर इस मामले में दूसरे नंबर पर रहने वाले कैरेबियाई स्पिनर सुनील नरेन की मानें तो इस बार की जीत, 2012 की खिताबी जीत से ज्यादा संतोषजनक है। नरेन ने कहा, 'ये साल और बेहतर था क्योंकि हमने 200 के लक्ष्य को हासिल किया जो कि आसान काम नहीं है। लड़कों ने इस जीत के लिए कड़ी मेहनत की थी और वे इस लम्हे के हकदार हैं। इस साल हमारी शुरुआत अच्छी नहीं रही लेकिन हमने लगातार नौ जीत हासिल करके टूर्नामेंट का अंत किया जो अद्भुत है। एक बार खिताब जीतना शानदार होता है लेकिन दो बार इसको अपने नाम करना एक अद्भुत सफलता है और शानदार अहसास है। केकेआर का हिस्सा बनकर बहुत अच्छा महसूस होता है और

फोटो में देखें, क्या हुआ जब ग्रांड फैशन इंवेट में Bollywood Divas ने रैंप पर उतरकर बिखेरे जलवे

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।।

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को

गौरव गाथा

हिन्दी साहित्य को अपने अस्तित्व से गौरवान्वित करने वाली विशेष कहानियों के इस संग्रह में प्रस्तुत है— सैय्यद इंशा अल्ला खाँ की 'रानी केतकी की कहानी'। यह संभवत: खड़ी बोली की पहली कहानी है और इसका रचनाकाल १८०३ ईस्वी के आसपास माना जाता है।

यह वह कहानी है कि जिसमें हिंदी छुट।

और न किसी बोली का मेल है न पुट।।

सिर झुकाकर नाक रगड़ता हूँ उस अपने बनानेवाले के सामने जिसने हम सब को बनाया और बात में वह कर दिखाया कि जिसका भेद किसी ने न पाया। आतियाँ जातियाँ जो साँसें हैं, उसके बिन ध्यान यह सब फाँसे हैं। यह कल का पुतला जो अपने उस खेलाड़ी की सुध रक्खे तो खटाई में क्यों पड़े और कड़वा कसैला क्यों हो। उस फल की मिठाई चक्खे जो बड़े से बड़े अगलों ने चक्खी है।

देखने को दो आँखें दीं और सुनने के दो कान।

नाक भी सब में ऊँची कर दी मरतों को जी दान।।

मिट्टी के बासन को इतनी सकत कहाँ जो अपने कुम्हार के करतब कुछ ताड़ सके। सच है, जो बनाया हुआ हो, सो अपने बनानेवालो को क्या सराहे और क्या कहे। यों जिसका जी चाहे, पड़ा बके। सिर से लगा पाँव तक जितने रोंगटे हैं, जो सबके सब बोल उठें और सराहा करें और उतने बरसों उसी ध्यान में रहें जितनी सारी नदियों में रेत और फूल फलियाँ खेत में हैं, तो भी कुछ न हो सके, कराहा करें। इस सिर झुकाने के साथ ही दिन रात जपता हूँ उस अपने दाता के भेजे हुए प्यारे को जिसके लिये यों कहा है -

जो तू न होता तो मैं कुछ न बनाता; और उसका चचेरा भाई जिसका ब्याह उसके घर हुआ, उसकी सुरत मुझे लगी रहती है। मैं फूला अपने आप में नहीं समाता, और जितने उनके लड़के वाले हैं, उन्हीं को मेरे जी में चाह है। और कोई कुछ हो, मुझे नहीं भाता। मुझको उम्र घराने छूट किसी चोर ठग से क्या पड़ी! जीते और मरते आसरा उन्हीं सभों का और उनके घराने का रखता हूँ तीसों घड़ी।

डौल डाल एक अनोखी बात का

एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले, तब जाके मेरा जी फूल की कली के रूप में खिले। बाहर की बोली और गँवारी कुछ उसके बीच में न हो। अपने मिलने वालों में से एक कोई पढ़े-लिखे, पुराने-धुराने, डाँग, बूढ़े धाग यह खटराग लाए। सिर हिलाकर, मुँह थुथाकर, नाक भी चढ़ाकर, आँखें फिराकर लगे कहने - यह बात होते दिखाई नहीं देती। हिंदवीपन भी न निकले और भाखापन भी न हो। बस जैसे भले लोग अच्छे आपस में बोलते चालते हैं, ज्यों का त्यों वही सब डौल रहे और छाँह किसी की न हो, यह नही होने का। मैंने उनकी ठंडी साँस का टहोका खाकर झुँझलाकर कहा - मैं कुछ ऐसा बड़बोला नहीं जो राई को

टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं।।

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं।।

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

परबत कर दिखाऊँ और झूठ सच बोलकर उँगलियाँ नचाऊँ, और बे-सिर बे-ठिकाने की उलझी-सुलझी बातें सुनाऊँ, जो मुझ से न हो सकता तो यह बात मुँह से क्यों निकालता? जिस ढब से होता, इस बखेड़े को टालता।

इस कहानी का कहनेवाला यहाँ आपको जताता है और जैसा कुछ उसे लोग पुकारते हैं, कह सुनाता है। दहना हाथ मुँह पर फेरकर आपको जताता हूँ, जो मेरे दाता ने चाहा तो यह ताव-भाव, राव-चाव और कूद-फाँद, लपट झपट दिखाऊँ जो देखते ही आप के ध्यान का घोड़ा, जो बिजली से भी बहुत चंचल अल्हड़पन में है, हिरन के रूप में अपनी चौकड़ी भूल जाय।

टुक घोड़े पर चढ़ के अपने आता हूँ मैं।

करतब जो कुछ है, कर दिखता हूँ मैं॥

उस चाहनेवाले ने जो चाहा तो अभी।

कहता जो कुछ हूँ, कर दिखाता हूँ मैं॥

अब आप कान रख के, आँखें मिला के, सन्मुख होके टुक इधर देखिए, किस ढंग से बढ़ चलता हूँ और अपने फूल के पंखड़ी जैसे होठों से किस किस रूप के फूल उगलता हूँ।

कहानी के जीवन का उभार और बोलचाल की दुलहिन का सिंगार

किसी देश में किसी राजा के घर एक बेटा था। उसे उसके माँ-बाप और सब घर के लोग कुँवर उदैभान करके पुकारते थे। सचमुच उसके जीवन की जोत में सूरज की एक स्रोत आ मिली थी। उसका अच्छापन और भला लगना कुछ ऐसा न था जो किसी के लिखने और कहने में आ सके। पंद्रह बरस भरके उसने सोलहवें में पाँव रक्खा था। कुछ यों ही सी मसें भीनती चली थीं। पर किसी बात के सोच का घर-घाट न पाया था और चाह की नदी का पाट उसने देखा न था। एक दिन हरियाली देखने को अपने घोड़े पर चढ़के अठखेल और अल्हड़पन के साथ देखता भालता चला जाता था। इतने में जो एक हिरनी उसके सामने आई, तो उसका जी लोट पोट हुआ। उस हिरनी के पीछे सब छोड़ छाड़कर घोड़ा फेंका। कोई घोड़ा उसको पा सकता था? जब सूरज छिप गया और हिरनी आँखों से ओझल हुई, तब तो कुँवर उदैभान भूखा, प्यासा, उनींदा, जँभाइयाँ, अँगड़ाइयाँ लेता, हक्का बक्का होके लगा आसरा ढूँढने। इतने में कुछ एक अमराइयाँ देख पड़ी, तो उधर चल निकला; तो देखता है वो चालीस-पचास रंडियाँ एक से एक जोबन में अगली झूला डाले पड़ी झूल रही है और सावन गातियाँ हैं।

ज्यों ही उन्होंने उसको देखा - तू कौन? तू कौन? की चिंघाड़ सी पड़ गई। उन सभों में एक के साथ उसकी आँख लग गई।

कोई कहती थी यह उचक्का है।

कोई कहती थी एक पक्का है।

वही झूलेवाली लाल जोड़ा पहने हुए, जिसको सब रानी केतकी कहते थीं, उसके भी जी में उसकी चाह ने घर किया। पर कहने-सुनने को बहुत सी नाँह-नूह की और कहा -

Consonant spacing

पपकपवपवकवव
पपखपवपवखवव
पपगपवपवगवव
पपघपवपवघवव
पपङपवपवङवव
पपचपवपवचवव
पपछपवपवछवव
पपजपवपवजवव
पपझपवपवझवव
पपञपवपवञवव
पपटपवपवटवव
पपठपवपवठवव
पपडपवपवडवव
पपढपवपवढवव
पपणपवपवणवव
पपतपवपवतवव
पपथपवपवथवव
पपदपवपवदवव
पपधपवपवधवव
पपनपवपवनवव
पपपपवपवपवव
पपफपवपवफवव
पपबपवपवबवव
पपभपवपवभवव
पपमपवपवमवव
पपयपवपवयवव
पपरपवपवरवव
पपलपवपवलवव
पपळपवपवळवव
पपवपवपवववव
पपशपवपवशवव
पपषपवपवषवव
पपसपवपवसवव
पपहपवपवहवव
पपक़पवपवक़वव
पपख़पवपवख़वव
पपग़पवपवग़वव
पपज़पवपवज़वव
पपड़पवपवड़वव
पपढ़पवपवढ़वव
पपफ़पवपवफ़वव
पपय़पवपवय़वव
पपक्षपवपवक्षवव
पपज्ञपवपवज्ञवव

Vowel spacing

पपअपवपवअवव
पपऑपवपवऑवव
पपॲपवपवॲवव
पपइपवपवइवव
पपईपवपवईवव
पपउपवपवउवव
पपऊपवपवऊवव
पपएपवपवएवव
पपऐपवपवऐवव
पपऍपवपवऍवव
पपऎपवपवऎवव
पपआपवपवआवव
पपओपवपवओवव
पपऔपवपवऔवव
पपऋपवपवऋवव
पपॠपवपवॠवव
पपऌपवपवऌवव
पपॡपवपवॡवव

Rakar spacing

पपक्रपवपवक्रवव
पपख्रपवपवख्रवव
पपग्रपवपवग्रवव
पपघ्रपवपवघ्रवव
पपङ्रपवपवङ्रवव
पपच्रपवपवच्रवव
पपछ्रपवपवछ्रवव
पपज्रपवपवज्रवव
पपझ्रपवपवझ्रवव
पपञ्रपवपवञ्रवव
पपट्रपवपवट्रवव
पपठ्रपवपवठ्रवव
पपड्रपवपवड्रवव
पपढ्रपवपवढ्रवव
पपण्रपवपवण्रवव
पपत्रपवपवत्रवव
पपथ्रपवपवथ्रवव
पपद्रपवपवद्रवव
पपध्रपवपवध्रवव
पपन्रपवपवन्रवव
पपप्रपवपवप्रवव
पपफ्रपवपवफ्रवव
पपब्रपवपवब्रवव
पपभ्रपवपवभ्रवव
पपम्रपवपवम्रवव
पपय्रपवपवय्रवव
पपर्‍रपवपवर्‍रवव
पपल्रपवपवल्रवव
पपव्रपवपवव्रवव
पपश्रपवपवश्रवव
पपष्रपवपवष्रवव
पपस्रपवपवस्रवव
पपह्रपवपवह्रवव
पपळ्रपवपवळ्रवव
पपक्ष्रपवपवक्ष्रवव
पपज्ञ्रपवपवज्ञ्रवव

Conjunct spacing

पपत्तपवपवत्तवव
पपरुपवपवरुवव
पपरूपवपवरूवव
पपङ्यपवपवङ्यवव
पपज्जपवपवज्जवव
पपज्थपवपवज्थवव
पपज्यपवपवज्यवव
पपज्सपवपवज्सवव
पपछ्यपवपवछ्यवव
पपट्यपवपवट्यवव
पपठ्यपवपवठ्यवव
पपड्यपवपवड्यवव
पपढ्यपवपवढ्यवव
पपट्टपवपवट्टवव
पपट्ठपवपवट्ठवव
पपठ्ठपवपवठ्ठवव
पपड्ढपवपवड्ढवव
पपड्डपवपवड्डवव
पपढ्ढपवपवढ्ढवव
पपत्तपवपवत्तवव
पपत्खपवपवत्खवव
पपत्थपवपवत्थवव
पपत्नपवपवत्नवव
पपत्सपवपवत्सवव
पपत्यपवपवत्यवव
पपद्धपवपवद्धवव
पपद्नपवपवद्नवव
पपद्बपवपवद्बवव
पपद्गपवपवद्गवव
पपद्बपवपवद्बवव
पपद्भपवपवद्भवव
पपद्भ्यपवपवद्भ्यवव
पपद्मपवपवद्मवव
पपद्गपवपवद्गवव
पपद्दपवपवद्दवव
पपन्भपवपवन्भवव
पपन्मपवपवन्मवव
पपल्जपवपवल्जवव
पपल्थपवपवल्थवव
पपल्भपवपवल्भवव
पपल्मपवपवल्मवव
पपल्यपवपवल्यवव
पपद्घपवपवद्घवव
पपद्भ्यपवपवद्भ्यवव
पपद्मपवपवद्मवव
पपष्टपवपवष्टवव
पपन्भपवपवन्भवव
पपष्ठपवपवष्ठवव
पपल्जपवपवल्जवव
पपह्णपवपवह्णवव
पपह्नपवपवह्नवव
पपह्मपवपवह्मवव
पपह्यपवपवह्यवव
पपह्लपवपवह्लवव
पपह्वपवपवह्ववव

U/Uu variant spacing

पपहुपवपवहुवव
पपहूपवपवहूवव
पपहृपवपवहृवव
पपहॄपवपवहॄवव
पपहुपवपवहुवव
पपहूपवपवहूवव

पपरुपवपवरुवव
पपरूपवपवरूवव
पपदुपवपवदुवव
पपदूपवपवदूवव
पपदृपवपवदृवव

Vowel sign spacing

पपपंपपरंपपकंपप
पपपॅपपरॅपपकॅपप
पपपँपपरँपपकँपप
पपपँपपरँपपकँपप
पपपॆपपरॆपपकॆपप
पपपॆंपपरॆंपपकॆंपप
पपपॆँपपरॆँपपकॆँपप
पपपेपपरेपपकेपप
पपपेंपपरेंपपकेंपप
पपपेँपपरेँपपकेँपप
पपपैपपरैपपकैपप
पपपैंपपरैंपपकैंपप
पपपैँपपरैँपपकैँपप

पपपापपरापपकापप
पपपिपपरिपपकिपप
पपपीपपरीपपकीपप
पपपींपपरींपपकींपप
पपपीँपपरीँपपकीँपप
पपपॉपपरॉपपकॉपप
पपपाँपपराँपपकाँपप
पपपॊपपरॊपपकॊपप
पपपॊंपपरॊंपपकॊंपप
पपपॊँपपरॊँपपकॊँपप
पपपोपपरोपपकोपप
पपपोंपपरोंपपकोंपप
पपपोँपपरोँपपकोँपप

पपपौपपरौपपकौपप
पपपौंपपरौंपपकौंपप
पपपौँपपरौँपपकौँपप

पपपुपपरुपपकुपप
पपपूपपरूपपकूपप
पपपृपपरृपपकृपप
पपपॄपपरॄपपकॄपप
पपपॢपपरॢपपकॢपप
पपपॣपपरॣपपकॣपप

पपर्पपपर्रपपर्कपप
पपर्पंपपर्रंपपर्कंपप
पपर्पॅपपर्रॅपपर्कॅपप
पपर्पॅंपपर्रॅंपपर्कॅंपप
पपर्पॆपपर्रॆपपर्कॆपप
पपर्पॆंपपर्रॆंपपर्कॆंपप
पपर्पेपपर्रेपपर्केपप
पपर्पेंपपर्रेंपपर्केंपप
पपर्पैपपर्रैपपर्कैपप
पपर्पैंपपर्रैंपपर्कैंपप

पपपऽपवपववऽवव
पपॽपवपवॽवव
पपप:पवपवव:वव

Numeral spacing

००००१०१०११
००१०१०११११
००२०१०१२११
००३०१०१३११
००४०१०१४११
००५०१०१५११
००६०१०१६११
००७०१०१७११
००८०१०१८११
००९०१०१९११

Letter-punct spacing

पपक, पवक.
पपख, पवख.
पपग, पवग.
पपघ, पवघ.
पपङ, पवङ.
पपच, पवच.
पपछ, पवछ.
पपज, पवज.
पपझ, पवझ.
पपञ, पवञ.
पपट, पवट.
पपठ, पवठ.
पपड, पवड.
पपढ, पवढ.
पपण, पवण.
पपत, पवत.
पपथ, पवथ.
पपद, पवद.
पपध, पवध.
पपन, पवन.
पपप, पवप.

पपफ, पवफ.
पपब, पवब.
पपभ, पवभ.
पपम, पवम.
पपय, पवय.
पपर, पवर.
पपल, पवल.
पपळ, पवळ.
पपव, पवव.
पपश, पवश.
पपष, पवष.
पपस, पवस.
पपह, पवह.
पपक़, पवक़.
पपख़, पवख़.
पपग़, पवग़.
पपज़, पवज़.
पपड़, पवड़.
पपढ़, पवढ़.
पपफ़, पवफ़.
पपय़, पवय़.
पपक्ष, पवक्ष.
पपज्ञ, पवज्ञ.

पपअ, पवअ.
पपॲ, पवॲ.
पपअॅ, पवअॅ.
पपइ, पवइ.
पपई, पवई.
पपउ, पवउ.
पपऊ, पवऊ.
पपए, पवए.
पपऐ, पवऐ.
पपऍ, पवऍ.
पपऎ, पवऎ.

पपआ, पवआ.
पपओ, पवओ.
पपऔ, पवऔ.
पपऋ, पवऋ.
पपॠ, पवॠ.
पपऌ, पवऌ.
पपॡ, पवॡ.

पपङ्र, पवङ्र.
पपछ्र, पवछ्र.
पपट्र, पवट्र.
पपठ्र, पवठ्र.
पपड्र, पवड्र.
पपढ्र, पवढ्र.
पपद्र, पवद्र.
पपर्र, पवर्र.
पपह्र, पवह्र.
पपळ्र, पवळ्र.

पपत्त, पवत्त.
पपऱु, पवऱु.
पपऱू, पवऱू.
पपट्ट, पवट्ट.
पपट्ठ, पवट्ठ.
पपठ्ठ, पवठ्ठ.
पपड्ग, पवड्ग.
पपड्ड, पवड्ड.
पपड्ढ, पवड्ढ.
पपद्घ, पवद्घ.
पपद्न, पवद्न.
पपद्ब, पवद्ब.
पपद्भ, पवद्भ.
पपद्व, पवद्व.
पपद्ध, पवद्ध.

पपद्द, पवद्द.
पपष्ट, पवष्ट.
पपन्भ, पवन्भ.
पपष्ठ, पवष्ठ.
पपल्ज, पवल्ज.
पपह्ण, पवह्ण.
पपह्न, पवह्न.
पपह्ल, पवह्ल.
पपह्व, पवह्व.

पपहु, पवहु.
पपहू, पवहू.
पपहृ, पवहृ.
पपहॄ, पवहॄ.
पपह्रु, पवह्रु.
पपह्रू, पवह्रू.
पपरु, पवरु.
पपरू, पवरू.
पपदु, पवदु.
पपदू, पवदू.
पपदृ, पवदृ.

-

पपक; पवक:
पपख; पवख:
पपग; पवग:
पपघ; पवघ:
पपङ; पवङ:
पपच; पवच:
पपछ; पवछ:
पपज; पवज:
पपझ; पवझ:
पपञ; पवञ:
पपट; पवट:
पपठ; पवठ:

पपड; पवड:
पपढ; पवढ:
पपण; पवण:
पपत; पवत:
पपथ; पवथ:
पपद; पवद:
पपध; पवध:
पपन; पवन:
पपप; पवप:
पपफ; पवफ:
पपब; पवब:
पपभ; पवभ:
पपम; पवम:
पपय; पवय:
पपर; पवर:
पपल; पवल:
पपळ; पवळ:
पपव; पवव:
पपश; पवश:
पपष; पवष:
पपस; पवस:
पपह; पवह:
पपक़; पवक़:
पपख़; पवख़:
पपग़; पवग़:
पपज़; पवज़:
पपड़; पवड़:
पपढ़; पवढ़:
पपफ़; पवफ़:
पपय़; पवय़:
पपक्ष; पवक्ष:
पपज्ञ; पवज्ञ:

पपअ; पवअ:
पपअें; पवअें:
पपअॅ; पवअॅ:
पपइ; पवइ:
पपई; पवई:
पपउ; पवउ:
पपऊ; पवऊ:
पपए; पवए:
पपऐ; पवऐ:
पपऍ; पवऍ:
पपऐॅ; पवऐॅ:
पपआ; पवआ:
पपओ; पवओ:
पपऔ; पवऔ:
पपऋ; पवऋ:
पपॠ; पवॠ:
पपऌ; पवऌ:
पपॡ; पवॡ:

पपङ्र; पवङ्र:
पपछ्र; पवछ्र:
पपट्र; पवट्र:
पपठ्र; पवठ्र:
पपड्र; पवड्र:
पपढ्र; पवढ्र:
पपद्र; पवद्र:
पपर्; पवर्:
पपह्र; पवह्र:
पपळ्; पवळ्:

पपत्त; पवत्त:
पपऱु; पवऱु:
पपऱू; पवऱू:
पपट्ट; पवट्ट:
पपट्ठ; पवट्ठ:
पपठ्ठ; पवठ्ठ:
पपड्ग; पवड्ग:
पपड्ड; पवड्ड:
पपड्ढ; पवड्ढ:
पपद्ध; पवद्ध:
पपद्न; पवद्न:
पपद्ब; पवद्ब:
पपद्भ; पवद्भ:
पपद्व; पवद्व:
पपद्ध; पवद्ध:
पपद्द; पवद्द:
पपष्ट; पवष्ट:
पपन्भ; पवन्भ:
पपष्ठ; पवष्ठ:
पपल्ज; पवल्ज:
पपह्ण; पवह्ण:
पपह्न; पवह्न:
पपह्ल; पवह्ल:
पपह्व; पवह्व:

पपहु; पवहु:
पपहू; पवहू:
पपहृ; पवहृ:
पपहॄ; पवहॄ:
पपहु; पवहु:
पपहू; पवहू:
पपरु; पवरु:
पपरू; पवरू:
पपदु; पवदु:
पपदू; पवदू:
पपदृ; पवदृ:

-

पपक| पवक:
पपख| पवख:
पपग| पवग:
पपघ| पवघ:
पपङ| पवङ:
पपच| पवच:
पपछ| पवछ:
पपज| पवज:
पपझ| पवझ:
पपञ| पवञ:
पपट| पवट:
पपठ| पवठ:
पपड| पवड:
पपढ| पवढ:
पपण| पवण:
पपत| पवत:
पपथ| पवथ:
पपद| पवद:
पपध| पवध:
पपन| पवन:
पपप| पवप:
पपफ| पवफ:
पपब| पवब:
पपभ| पवभ:
पपम| पवम:
पपय| पवय:
पपर| पवर:
पपल| पवल:
पपळ| पवळ:
पपव| पवव:
पपश| पवश:
पपष| पवष:
पपस| पवस:
पपह| पवह:
पपक़| पवक़:
पपख़| पवख़:
पपग़| पवग़:
पपज़| पवज़:
पपड़| पवड़:
पपढ़| पवढ़:
पपफ़| पवफ़:
पपय़| पवय़:
पपक्ष| पवक्ष:
पपज्ञ| पवज्ञ:

पपअ| पवअ:
पपअें| पवअें:
पपअॅ| पवअॅ:
पपइ| पवइ:
पपई| पवई:
पपउ| पवउ:
पपऊ| पवऊ:
पपए| पवए:
पपऐ| पवऐ:
पपऍ| पवऍ:
पपऐॅ| पवऐॅ:
पपआ| पवआ:
पपओ| पवओ:
पपऔ| पवऔ:
पपऋ| पवऋ:
पपॠ| पवॠ:
पपऌ| पवऌ:
पपॡ| पवॡ:

पपङ्र| पवङ्र:
पपछ्र| पवछ्र:
पपट्र| पवट्र:
पपठ्र| पवठ्र:
पपड्र| पवड्र:
पपढ्र| पवढ्र:
पपद्र| पवद्र:
पपर्| पवर्:
पपह्र| पवह्र:
पपळ्| पवळ्:

पपत्त| पवत्त:
पपऱु| पवऱु:
पपऱू| पवऱू:
पपट्ट| पवट्ट:
पपट्ठ| पवट्ठ:
पपठ्ठ| पवठ्ठ:
पपड्ग| पवड्ग:
पपड्ड| पवड्ड:
पपड्ढ| पवड्ढ:
पपद्ध| पवद्ध:
पपद्न| पवद्न:
पपद्ब| पवद्ब:
पपद्भ| पवद्भ:
पपद्व| पवद्व:
पपद्ध| पवद्ध:
पपद्द| पवद्द:
पपष्ट| पवष्ट:
पपन्भ| पवन्भ:
पपष्ठ| पवष्ठ:
पपल्ज| पवल्ज:
पपह्ण| पवह्ण:
पपह्न| पवह्न:
पपह्ल| पवह्ल:
पपह्व| पवह्व:

पपहु| पवहु:
पपहू| पवहू:
पपहृ| पवहृ:
पपहॄ| पवहॄ:
पपहु| पवहु:
पपहू| पवहू:
पपरु| पवरु:
पपरू| पवरू:
पपदु| पवदु:
पपदू| पवदू:
पपदृ| पवदृ:

-

पपक! पवक?
पपख! पवख?
पपग! पवग?
पपघ! पवघ?
पपङ! पवङ?
पपच! पवच?
पपछ! पवछ?
पपज! पवज?
पपझ! पवझ?
पपञ! पवञ?
पपट! पवट?
पपठ! पवठ?
पपड! पवड?
पपढ! पवढ?
पपण! पवण?
पपत! पवत?
पपथ! पवथ?
पपद! पवद?
पपध! पवध?
पपन! पवन?
पपप! पवप?
पपफ! पवफ?
पपब! पवब?
पपभ! पवभ?
पपम! पवम?
पपय! पवय?
पपर! पवर?
पपल! पवल?
पपळ! पवळ?

पपव! पवव?
पपश! पवश?
पपष! पवष?
पपस! पवस?
पपह! पवह?
पपक़! पवक़?
पपख़! पवख़?
पपग़! पवग़?
पपज़! पवज़?
पपड़! पवड़?
पपढ़! पवढ़?
पपफ़! पवफ़?
पपय़! पवय़?
पपक्ष! पवक्ष?
पपज्ञ! पवज्ञ?

पपअ! पवअ?
पपऄ! पवऄ?
पपॲ! पवॲ?
पपइ! पवइ?
पपई! पवई?
पपउ! पवउ?
पपऊ! पवऊ?
पपए! पवए?
पपऐ! पवऐ?
पपऍ! पवऍ?
पपऎ! पवऎ?
पपआ! पवआ?
पपओ! पवओ?
पपऔ! पवऔ?
पपऋ! पवऋ?
पपॠ! पवॠ?
पपऌ! पवऌ?
पपॡ! पवॡ?

पपङ्र! पवङ्र?
पपछ्र! पवछ्र?
पपट्र! पवट्र?
पपठ्र! पवठ्र?
पपड्र! पवड्र?
पपढ्र! पवढ्र?
पपद्र! पवद्र?
पपर्र! पवर्र?
पपह्र! पवह्र?
पपळ्र! पवळ्र?

पपत्त! पवत्त?
पपऱु! पवऱु?
पपऱू! पवऱू?
पपट्ट! पवट्ट?
पपट्ठ! पवट्ठ?
पपठ्ठ! पवठ्ठ?
पपड्ढ! पवड्ढ?
पपड्ड! पवड्ड?
पपढ्ढ! पवढ्ढ?
पपद्ध! पवद्ध?
पपद्ग! पवद्ग?
पपद्ब! पवद्ब?
पपद्भ! पवद्भ?
पपद्घ! पवद्घ?
पपद्ध्र! पवद्ध्र?
पपद्द! पवद्द?
पपष्ट! पवष्ट?
पपन्भ! पवन्भ?
पपष्ठ! पवष्ठ?
पपल्ज! पवल्ज?
पपह्ण! पवह्ण?
पपह्न! पवह्न?
पपह्ल! पवह्ल?
पपह्व! पवह्व?

पपहु! पवहु?
पपहू! पवहू?
पपहृ! पवहृ?
पपहॄ! पवहॄ?
पपहु! पवहु?
पपहू! पवहू?
पपरु! पवरु?
पपरू! पवरू?
पपदु! पवदु?
पपदू! पवदू?
पपदृ! पवदृ?

-
पपक–कपव
पपख–खपव
पपग–गपव
पपघ–घपव
पपङ–ङपव
पपच–चपव
पपछ–छपव
पपज–जपव
पपझ–झपव
पपञ–ञपव
पपट–टपव
पपठ–ठपव
पपड–डपव
पपढ–ढपव
पपण–णपव
पपत–तपव
पपथ–थपव
पपद–दपव
पपध–धपव
पपन–नपव
पपप–पपव
पपफ–फपव
पपब–बपव
पपभ–भपव
पपम–मपव
पपय–यपव
पपर–रपव
पपल–लपव
पपळ–ळपव
पपव–वपव
पपश–शपव
पपष–षपव
पपस–सपव
पपह–हपव
पपक़–क़पव
पपख़–ख़पव
पपग़–ग़पव
पपज़–ज़पव
पपड़–ड़पव
पपढ़–ढ़पव
पपफ़–फ़पव
पपय़–य़पव
पपक्ष–क्षपव
पपज्ञ–ज्ञपव

पपअ–अपव
पपऄ–ऄपव
पपॲ–ॲपव
पपइ–इपव
पपई–ईपव
पपउ–उपव
पपऊ–ऊपव
पपए–एपव
पपऐ–ऐपव
पपऍ–ऍवव
पपऎ–ऎपव
पपआ–आपव
पपओ–ओपव
पपऔ–औपव
पपऋ–ऋपव
पपॠ–ॠपव
पपऌ–ऌपव
पपॡ–ॡपव

पपङ्र–ङ्रपव
पपछ्र–छ्रपव
पपट्र–ट्रपव
पपठ्र–ठ्रपव
पपड्र–ड्रपव
पपढ्र–ढ्रपव
पपद्र–द्रपव
पपर्र–र्रपव
पपह्र–ह्रपव
पपळ्र–ळ्रपव

पपत्त–त्तपव
पपऱु–ऱुपव
पपऱू–ऱूपव
पपट्ट–ट्टपव
पपट्ठ–ट्ठपव
पपठ्ठ–ठ्ठपव
पपड्ढ–ड्ढपव
पपड्ड–ड्डपव
पपढ्ढ–ढ्ढपव
पपद्ध–द्धपव
पपद्ग–द्गपव
पपद्ब–द्बपव
पपद्भ–द्भपव
पपद्घ–द्घपव
पपद्ध्र–द्ध्रपव
पपद्द–द्दपव
पपष्ट–ष्टपव
पपन्भ–न्भपव
पपष्ठ–ष्ठपव
पपल्ज–ल्जपव
पपह्ण–ह्णपव
पपह्न–ह्नपव
पपह्ल–ह्लपव
पपह्व–ह्वपव

पपहु–हुपव
पपहू–हूपव
पपहृ–हृपव
पपहॄ–हॄपव
पपहु–हुपव
पपहू–हूपव
पपरु–रुपव
पपरू–रूपव
पपदु–दुपव
पपदू–दूपव
पपदृ–दृपव

-
"कपवपक"
"खपवपख"
"गपवपग"
"घपवपघ"
"ङपवपङ"
"चपवपच"
"छपवपछ"
"जपवपज"
"झपवपझ"
"ञपवपञ"
"टपवपट"
"ठपवपठ"
"डपवपड"
"ढपवपढ"
"णपवपण"
"तपवपत"
"थपवपथ"
"दपवपद"
"धपवपध"
"नपवपन"
"पपवपप"
"फपवपफ"
"बपवपब"
"भपवपभ"
"मपवपम"
"यपवपय"
"रपवपर"
"लपवपल"
"ळपवपळ"
"वपवपव"
"शपवपश"
"षपवपष"
"सपवपस"
"हपवपह"
"क़पवपक़"
"ख़पवपख़"
"ग़पवपग़"
"ज़पवपज़"
"ड़पवपड़"
"ढ़पवपढ़"
"फ़पवपफ़"
"य़पवपय़"
"क्षपवपक्ष"
"ज्ञपवपज्ञ"

"अपवपअ"
"ऄपवपऄ"

"ॲपवपॲ"
"इपवपइ"
"ईपवपई"
"उपवपउ"
"ऊपवपऊ"
"एपवपए"
"ऐपवपऐ"
"ऍपवपऍवव"
"ऎपवपऎ"
"आपवपआ"
"ओपवपओ"
"औपवपऔ"
"ऋपवपऋ"
"ॠपवपॠ"
"ऌपवपऌ"
"ॡपवपॡ"

"ङ्गपवपङ्ग"
"छ्रपवपछ्र"
"ट्रपवपट्र"
"ठ्रपवपठ्र"
"ड्रपवपड्र"
"ढ्रपवपढ्र"
"द्रपवपद्र"
"ऱ्पवपऱ्"
"ह्नपवपह्न"
"ऴ्पवपऴ्"

"त्तपवपत्त"
"ऱुपवपऱु"
"ऱूपवपऱू"
"ट्टपवपट्ट"
"ट्ठपवपट्ठ"
"ठ्ठपवपठ्ठ"
"ड्ढपवपड्ढ"

"ड्डपवपड्ड"
"ड्ढपवपड्ढ"
"द्धपवपद्ध"
"द्नपवपद्न"
"द्बपवपद्ब"
"द्भपवपद्भ"
"द्वपवपद्व"
"द्ध्रपवपद्ध्र"
"द्पवपद्"
"ष्टपवपष्ट"
"न्भपवपन्भ"
"ष्ठपवपष्ठ"
"ल्जपवपल्ज"
"ह्मपवपह्म"
"ह्नपवपह्न"
"ह्लपवपह्ल"
"ह्वपवपह्व"

"हुपवपहु"
"हूपवपहू"
"हृपवपहृ"
"हॄपवपहॄ"
"ह्युपवपह्यु"
"ह्यूपवपह्यू"
"रुपवपरु"
"रूपवपरू"
"दुपवपदु"
"दूपवपदू"
"दृपवपदृ"

Num-punct spacing

पवप ₹१०१ वपव
पवप ₹२०१ वपव
पवप ₹३०१ वपव
पवप ₹४०१ वपव
पवप ₹५०१ वपव
पवप ₹६०१ वपव
पवप ₹७०१ वपव
पवप ₹८०१ वपव
पवप ₹९०१ वपव

०००,०१०,०११
००१,०१०,१११
००२,०१०,२११
००३,०१०,३११
००४,०१०,४११
००५,०१०,५११
००६,०१०,६११
००७,०१०,७११
००८,०१०,८११
००९,०१०,९११

०००.०१०.०११
००१.०१०.१११
००२.०१०.२११
००३.०१०.३११
००४.०१०.४११
००५.०१०.५११
००६.०१०.६११
००७.०१०.७११
००८.०१०.८११
००९.०१०.९११

Ii Vowel sign - base

पपकिपपकिंपपर्किपप
पपखिपपखिंपपर्खिपप
पपगिपपगिंपपर्गिपप
पपघिपपघिंपपर्घिपप
पपङिपपङिंपपर्ङिपप
पपचिपपचिंपपर्चिपप
पपछिपपछिंपपर्छिपप
पपजिपपजिंपपर्जिपप
पपझिपपझिंपपर्झिपप
पपञिपपञिंपपर्ञिपप
पपटिपपटिंपपर्टिपप
पपठिपपठिंपपर्ठिपप
पपडिपपडिंपपर्डिपप
पपढिपपढिंपपर्ढिपप
पपणिपपणिंपपर्णिपप
पपतिपपतिंपपर्तिपप
पपथिपपथिंपपर्थिपप
पपदिपपदिंपपर्दिपप
पपधिपपधिंपपर्धिपप
पपनिपपनिंपपर्निपप
पपपिपपपिंपपर्पिपप
पपफिपपफिंपपर्फिपप
पपबिपपबिंपपर्बिपप
पपभिपपभिंपपर्भिपप
पपमिपपमिंपपर्मिपप
पपयिपपयिंपपर्यिपप
पपरिपपरिंपपर्रिपप
पपलिपपलिंपपर्लिपप
पपळिपपळिंपपर्ळिपप
पपविपपविंपपर्विपप
पपशिपपशिंपपर्शिपप
पपषिपपषिंपपर्षिपप
पपसिपपसिंपपर्सिपप

पपहिपपहिंपपर्हिपप
पपक्षिपपक्षिंपपर्क्षिपप
पपज्ञिपपज्ञिंपपर्ज्ञिपप

Ii Vowel sign clusters

पपक्किपप
पपक्खिपप
पपक्गिपप
पपक्चिपप
पपक्छिपप
पपक्जिपप
पपक्झिपप
पपक्टिपप
पपक्ठिपप
पपक्डिपप
पपक्ढिपप
पपक्णिपप
पपक्तिपप
पपक्थिपप
पपक्दिपप
पपक्निपप
पपक्पिपप
पपक्फिपप
पपक्बिपप
पपक्भिपप
पपक्मिपप
पपक्यिपप
पपक्रिपप
पपक्लिपप
पपक्विपप
पपक्शिपप
पपक्षिपप
पपक्सिपप
पपक्हिपप
पपक्ळिपप
पपक्व्र्यिपप
पपक्त्रिपप
पपक्त्यिपप

पपक्त्विपप
पपक्व्यिपप
पपक्स्टिपप
पपक्स्डिपप
पपक्स्तिपप
पपक्स्पिपप
पपक्स्प्रिपप
पपक्प्रिपप
पपक्स्प्लिपप
पपख्खिपप
पपख्टिपप
पपख्ठिपप
पपख्णिपप
पपख्तिपप
पपख्दिपप
पपख्निपप
पपख्पिपप
पपख्मिपप
पपख्यिपप
पपख्रिपप
पपख्लिपप
पपख्विपप
पपख्शिपप
पपख्षिपप
पपख्म्यिपप
पपख्त्यिपप
पपग्किपप
पपग्गिपप
पपग्जिपप
पपग्णिपप
पपग्तिपप
पपग्दिपप
पपग्धिपप
पपग्निपप
पपग्बिपप

पपग्भिपप
पपग्मिपप
पपग्यिपप
पपग्रिपप
पपग्लिपप
पपग्विपप
पपग्सिपप
पपग्ध्यिपप
पपग्ध्विपप
पपग्न्यिपप
पपग्भ्यिपप
पपग्र्यिपप
पपग्म्यिपप
पपग्ल्यिपप
पपघ्घिपप
पपघ्जिपप
पपघ्टिपप
पपघ्ठिपप
पपघ्डिपप
पपघ्णिपप
पपघ्तिपप
पपघ्दिपप
पपघ्निपप
पपघ्बिपप
पपघ्मिपप
पपघ्यिपप
पपघ्रिपप
पपघ्लिपप
पपघ्विपप
पपघ्सिपप
पपघ्ल्यिपप
पपङ्किपप
पपङ्कीपप
पपङ्खिपप
पपङ्खीपप

पपङ्गिपप
पपङ्गीपप
पपङ्घिपप
पपङ्घीपप
पपङ्चिपप
पपङ्क्षपप
पपङ्क्रीपप
पपङ्क्रिपप
पपङ्मिपप
पपङ्यिपप
पपङ्रिपप
पपच्किपप
पपच्खिपप
पपच्चिपप
पपच्टिपप
पपच्ठिपप
पपच्डिपप
पपच्ढिपप
पपच्णिपप
पपच्तिपप
पपच्थिपप
पपच्दिपप
पपच्धिपप
पपच्निपप
पपच्यिपप
पपच्रिपप
पपच्लिपप
पपच्विपप
पपच्सिपप
पपच्पिपप
पपच्मिपप
पपच्च्यिपप
पपछ्यिपप
पपछ्रिपप
पपछ्विपप

पपज्किपप
पपज्जिपप
पपज्झिपप
पपज्ञिपप
पपज्तिपप
पपज्दिपप
पपज्निपप
पपज्बिपप
पपज्मिपप
पपज्यिपप
पपज्रिपप
पपज्लिपप
पपज्विपप
पपझ्किपप
पपझ्गिपप
पपझ्घिपप
पपझ्झिपप
पपझ्तिपप
पपझ्निपप
पपझ्यिपप
पपझ्रिपप
पपझ्लिपप
पपझ्विपप
पपझ्मिपप
पपञ्चिपप
पपञ्जिपप
पपञ्शिपप
पपञ्च्यिपप
पपञ्ज्यिपप
पपट्टिपप
पपट्टीपप
पपट्ठिपप
पपट्ठीपप
पपट्यिपप
पपट्रिपप

पपट्रीपप
पपट्विपप
पपट्वीपप
पपठ्ठिपप
पपठ्ठीपप
पपठ्रिपप
पपठ्ठ्यपप
पपड्डिपप
पपड्ढिपप
पपड्रिपप
पपड्ड्यिपप
पपढ्ढिपप
पपढ्ढीपप
पपढ्रिपप
पपढ्यिपप
पपढ्ढ्यिपप
पपण्टिपप
पपण्टीपप
पपण्ठिपप
पपण्डिपप
पपण्ढिपप
पपण्णिपप
पपण्तिपप
पपण्यिपप
पपण्रिपप
पपण्विपप
पपत्किपप
पपत्खिपप
पपत्तिपप
पपत्थिपप
पपत्निपप
पपत्पिपप
पपत्फिपप
पपत्बिपप
पपत्भिपप

पपत्मिपप
पपत्यिपप
पपत्रिपप
पपत्लिपप
पपत्विपप
पपत्सिपप
पपत्क्व्यिपप
पपत्क्रिपप
पपत्क्षिपप
पपत्ख्निपप
पपत्ख्रिपप
पपत्ख्रिपप
पपत्न्यिपप
पपत्प्रिपप
पपत्प्लिपप
पपत्म्यिपप
पपत्स्निपप
पपत्स्यिपप
पपत्स्विपप
पपत्स्न्यिपप
पपथ्किपप
पपथ्थिपप
पपथ्मिपप
पपथ्यिपप
पपथ्रिपप
पपथ्लिपप
पपथ्विपप
पपथ्सिपप
पपद्गिपप
पपद्घिपप
पपद्दिपप
पपद्धिपप
पपद्बिपप
पपद्भिपप

पपद्मिपप
पपद्रिपप
पपद्विपप
पपद्ध्यिपप
पपद्व्रिपप
पपद्‌यिपप
पपध्किपप
पपध्धिपप
पपध्निपप
पपध्यिपप
पपध्रिपप
पपध्लिपप
पपध्विपप
पपध्सिपप
पपन्किपप
पपन्खिपप
पपन्चिपप
पपन्छिपप
पपन्जिपप
पपन्झिपप
पपन्टिपप
पपन्ठिपप
पपन्डिपप
पपन्ढिपप
पपन्तिपप
पपन्थिपप
पपन्दिपप
पपन्धिपप
पपन्निपप
पपन्पिपप
पपन्फिपप
पपन्बिपप
पपन्भिपप
पपन्मिपप
पपन्यिपप

पपन्त्रिपप
पपन्लिपप
पपन्विपप
पपन्सिपप
पपन्हिपप
पपन्भ्यिपप
पपन्भ्विपप
पपन्म्यिपप
पपन्स्टिपप
पपन्स्यिपप
पपन्ह्यिपप
पपन्ज्यिपप
पपन्क्सिपप
पपन्त्यिपप
पपन्त्सिपप
पपन्थ्यिपप
पपन्थ्विपप
पपन्द्रिपप
पपन्द्विपप
पपन्ध्यिपप
पपन्ध्रिपप
पपन्प्रिपप
पपन्स्म्यिपप
पपप्किपप
पपप्झिपप
पपप्टिपप
पपप्ठिपप
पपप्टीपप
पपप्डिपप
पपप्ढिपप
पपप्णिपप
पपप्तिपप
पपप्थिपप
पपप्दिपप
पपप्धिपप

पपप्निपप
पपप्पिपप
पपप्फिपप
पपप्मिपप
पपप्यिपप
पपप्रिपप
पपप्लिपप
पपप्विपप
पपप्षिपप
पपप्सिपप
पपप्ळिपप
पपप्त्यिपप
पपफ्किपप
पपफ्जिपप
पपफ्टिपप
पपफ्तिपप
पपफ्दिपप
पपफ्निपप
पपफ्फिपप
पपफ्मिपप
पपफ्यिपप
पपफ्रिपप
पपफ्लिपप
पपफ्शिपप
पपभ्निपप
पपभ्यिपप
पपभ्रिपप
पपभ्लिपप
पपभ्विपप
पपभ्र्यिपप
पपम्तिपप
पपम्दिपप
पपम्निपप
पपम्पिपप
पपम्बिपप

पपम्भिपप
पपम्मिपप
पपम्यिपप
पपम्रिपप
पपम्लिपप
पपम्विपप
पपम्शिपप
पपम्सिपप
पपम्हिपप
पपम्म्यिपप
पपम्प्रिपप
पपम्ब्यिपप
पपम्ब्रिपप
पपम्भ्यिपप
पपम्भ्रिपप
पपम्भ्विपप
पपय्यिपप
पपय्रिपप
पपव्निपप
पपव्यिपप
पपव्रिपप
पपव्लिपप
पपव्सिपप
पपव्हिपप
पपल्किपप
पपल्खिपप
पपल्गिपप
पपल्चिपप
पपल्जिपप
पपल्टिपप
पपल्ठिपप
पपल्डिपप
पपल्ढिपप
पपल्तिपप
पपल्थिपप

पपल्दिपप
पपल्पिपप
पपल्फिपप
पपल्बिपप
पपल्भिपप
पपल्मिपप
पपल्यिपप
पपल्रिपप
पपल्विपप
पपल्सिपप
पपल्हिपप
पपल्ल्यिपप
पपल्ह्यिपप
पपल्क्यिपप
पपल्थ्यिपप
पपल्द्रिपप
पपश्किपप
पपश्खिपप
पपश्चिपप
पपश्छिपप
पपश्टिपप
पपश्तिपप
पपश्निपप
पपश्बिपप
पपश्मिपप
पपश्यिपप
पपश्रिपप
पपश्लिपप
पपश्विपप
पपश्शिपप
पपश्र्यिपप
पपस्किपप
पपस्खिपप
पपस्छिपप
पपस्जिपप

पपस्टिपप
पपस्ठिपप
पपस्डिपप
पपस्ढिपप
पपस्तिपप
पपस्थिपप
पपस्दिपप
पपस्निपप
पपस्पिपप
पपस्फिपप
पपस्बिपप
पपस्मिपप
पपस्यिपप
पपस्रिपप
पपस्लिपप
पपस्विपप
पपस्सिपप
पपस्म्यिपप
पपस्क्रिपप
पपस्त्यिपप
पपस्थ्यिपप
पपस्म्यिपप
पपस्त्विपप
पपस्प्रिपप
पपस्न्यिपप
पपह्णिपप
पपह्तिपप
पपह्यिपप
पपह्मिपप
पपह्म्यिपप
पपह्निपप
पपह्रिपप
पपह्लिपप
पपह्निपप
पपह्विपप

पपळ्यिपप
पपळ्पिपप
पपळ्विपप
पपक्ष्यिपप
पपक्ष्मिपप
पपक्ष्विपप

Half-to-base kerns

पपक्कपपक्खपपक्गपपक्घपपक्ङपपक्चप
पक्छपपक्जपपक्झपपक्ञपपक्टपपक्ठपपक्डप
पक्ढपपक्णपपक्तपपक्थपपक्दपपक्धपपक्नप
पक्नपपक्पपपक्फपपक्बपपक्भपपक्मपपक्यप
पक्रपपक्ऱपपक्लपपक्ळपपक्ऴपपक्वप
पक्शपपक्षपपक्सपपक्हपपक्क़पपक्ख़पपक्ग़प
पक्ज़पपक्ड़पपक्ढ़पपक्फ़पपक्य़पप

पपख्कपपख्खपपख्गपपख्घपपख्ङपपख्चप
पख्छपपख्जपपख्झपपख्ञपपख्टपपख्ठपपख्डप
पख्ढपपख्णपपख्तपपख्थपपख्दपपख्धपपख्नप
पख्नपपख्पपपख्फपपख्बपपख्भपपख्मपपख्यप
पख्रपपख्ऱपपख्लपपख्ळपपख्ऴपपख्वपपख्शप
पख्षपपख्सपपख्हपपख्क़पपख्ख़पपख्ग़पपख्ज़प
पख्ड़पपख्ढ़पपख्फ़पपख्य़पप

पपग्कपपग्खपपग्गपपग्घपपग्ङपपग्चप
पग्छपपग्जपपग्झपपग्ञपपग्टपपग्ठपपग्डप
पग्ढपपग्णपपग्तपपग्थपपग्दपपग्धपपग्नप
पग्नपपग्पपपग्फपपग्बपपग्भपपग्मपपग्यपपग्रप
पग्ऱपपग्लपपग्ळपपग्ऴपपग्वपपग्शपपग्षप
पग्सपपग्हपपग्क़पपग्ख़पपग्ग़पपग्ज़पपग्ड़प
पग्ढ़पपग्फ़पपग्य़पप

पपघ्कपपघ्खपपघ्गपपघ्घपपघ्ङपपघ्चप
पघ्छपपघ्जपपघ्झपपघ्ञपपघ्टपपघ्ठपपघ्डप
पघ्ढपपघ्णपपघ्तपपघ्थपपघ्दपपघ्धपपघ्नप
पघ्नपपघ्पपपघ्फपपघ्बपपघ्भपपघ्मपपघ्यप
पघ्रपपघ्ऱपपघ्लपपघ्ळपपघ्ऴपपघ्वप
पघ्शपपघ्षपपघ्सपपघ्हपपघ्क़पपघ्ख़पपघ्ग़प
पघ्ज़पपघ्ड़पपघ्ढ़पपघ्फ़पपघ्य़पप

पपच्कपपच्खपपच्गपपच्घपपच्ङपपच्चप
पच्छपपच्जपपच्झपपच्ञपपच्टपपच्ठपपच्डप
पच्ढपपच्णपपच्तपपच्थपपच्दपपच्धपपच्नप
पच्नपपच्पपपच्फपपच्बपपच्भपपच्मपपच्यप
पच्रपपच्ऱपपच्लपपच्ळपपच्ऴपपच्वपपच्शप
पच्षपपच्सपपच्हपपच्क़पपच्ख़पपच्ग़पपच्ज़प
पच्ड़पपच्ढ़पपच्फ़पपच्य़पप

पपछ्कपपछ्खपपछ्गपपछ्घपपछ्ङपपछ्चप
पछ्छपपछ्जपपछ्झपपछ्ञपपछ्टपपछ्ठप
पछ्डपपछ्ढपपछ्णपपछ्तपपछ्थपपछ्दप
पछ्धपपछ्नपपछ्नपपछ्पपपछ्फपपछ्बप
पछ्भपपछ्मपपछ्यपपछ्रपपछ्ऱपपछ्लप
पछ्ळपपछ्ऴपपछ्वपपछ्शपपछ्षपपछ्सप
पछ्हपपछ्क़पपछ्ख़पपछ्ग़पपछ्ज़पपछ्ड़प
पछ्ढ़पपछ्फ़पपछ्य़पप

पपज्कपपज्खपपज्गपपज्घपपज्ङपपज्चप
पज्छपपज्जपपज्झपपज्ञपपज्टपपज्ठपपज्डप
पज्ढपपज्णपपज्तपपज्थपपज्दपपज्धपपज्नप
पज्नपपज्पपपज्फपपज्बपपज्भपपज्मपपज्यप
पज्रपपज्ऱपपज्लपपज्ळपपज्ऴपपज्वपपज्शप
पज्षपपज्सपपज्हपपज्क़पपज्ख़पपज्ग़पपज्ज़प
पज्ड़पपज्ढ़पपज्फ़पपज्य़पप

पपझ्कपपझ्खपपझ्गपपझ्घपपझ्ङपपझ्चप
पझ्छपपझ्जपपझ्झपपझ्ञपपझ्टपपझ्ठपपझ्डप
पझ्ढपपझ्णपपझ्तपपझ्थपपझ्दपपझ्धपपझ्नप
पझ्नपपझ्पपपझ्फपपझ्बपपझ्भपपझ्मपपझ्यप
पझ्रपपझ्ऱपपझ्लपपझ्ळपपझ्ऴपपझ्वपपझ्शप
पझ्षपपझ्सपपझ्हपपझ्क़पपझ्ख़पपझ्ग़पपझ्ज़प
पझ्ड़पपझ्ढ़पपझ्फ़पपझ्य़पप

पपञ्कपपञ्खपपञ्गपपञ्घपपञ्ङपपञ्चप
पञ्छपपञ्जपपञ्झपपञ्ञपपञ्टपपञ्ठपपञ्डप
पञ्ढपपञ्णपपञ्तपपञ्थपपञ्दपपञ्धपपञ्नप
पञ्नपपञ्पपपञ्फपपञ्बपपञ्भपपञ्मपपञ्यप
पञ्रपपञ्ऱपपञ्लपपञ्ळपपञ्ऴपपञ्वपपञ्शप
पञ्षपपञ्सपपञ्हपपञ्क़पपञ्ख़पपञ्ग़पपञ्ज़प
पञ्ड़पपञ्ढ़पपञ्फ़पपञ्य़पप

पपट्कपपट्खपपट्गपपट्घपपट्ङपपट्चप
पट्छपपट्जपपट्झपपट्ञपपट्टपपट्ठपपट्डप
पट्ढपपट्णपपट्तपपट्थपपट्दपपट्धपपट्नप
पट्नपपट्पपपट्फपपट्बपपट्भपपट्मपपट्यप
पट्रपपट्ऱपपट्लपपट्ळपपट्ऴपपट्वपपट्शप
पट्षपपट्सपपट्हपपट्क़पपट्ख़पपट्ग़पपट्ज़प
पट्ड़पपट्ढ़पपट्फ़पपट्य़पप

पपठ्कपपठ्खपपठ्गपपठ्घपपठ्ङपपठ्चप
पठ्छपपठ्जपपठ्झपपठ्ञपपठ्टपपठ्ठपपठ्डप
पठ्ढपपठ्णपपठ्तपपठ्थपपठ्दपपठ्धपपठ्नप
पठ्नपपठ्पपपठ्फपपठ्बपपठ्भपपठ्मपपठ्यप
पठ्रपपठ्ऱपपठ्लपपठ्ळपपठ्ऴपपठ्वपपठ्शप
पठ्षपपठ्सपपठ्हपपठ्क़पपठ्ख़पपठ्ग़पपठ्ज़प
पठ्ड़पपठ्ढ़पपठ्फ़पपठ्य़पप

पपड्कपपड्खपपड्गपपड्घपपड्ङपपड्चप
पड्छपपड्जपपड्झपपड्ञपपड्टपपड्ठपपड्डप
पड्ढपपड्णपपड्तपपड्थपपड्दपपड्धपपड्नप
पड्नपपड्पपपड्फपपड्बपपड्भपपड्मपपड्यप
पड्रपपड्ऱपपड्लपपड्ळपपड्ऴपपड्वपपड्शप
पड्षपपड्सपपड्हपपड्क़पपड्ख़पपड्ग़पपड्ज़प
पड्ड़पपड्ढ़पपड्फ़पपड्य़पप

पपढ्कपपढ्खपपढ्गपपढ्घपपढ्ङपपढ्चप
पढ्छपपढ्जपपढ्झपपढ्ञपपढ्टपपढ्ठपपढ्डप
पढ्ढपपढ्णपपढ्तपपढ्थपपढ्दपपढ्धपपढ्नप
पढ्ऩपपढ्पपपढ्फपपढ्बपपढ्भपपढ्मपपढ्यप
पढ्रपपढ्ऱपपढ्लपपढ्ळपपढ्ऴपपढ्वपपढ्शप
पढ्षपपढ्सपपढ्हपपढ्क़पपढ्ख़पपढ्ग़पपढ्ज़प
पढ्ड़पपढ्ढ़पपढ्फ़पपढ्य़पप

पपण्कपपण्खपपण्गपपण्घपपण्ङपपण्चप
पण्छपपण्जपपण्झपपण्ञपपण्टपपण्ठपपण्डप
पण्ढपपण्णपपण्तपपण्थपपण्दपपण्धपपण्नप
पण्ऩपपण्पपपण्फपपण्बपपण्भपपण्मपपण्यप
पण्रपपण्ऱपपण्लपपण्ळपपण्ऴपपण्वपपण्शप
पण्षपपण्सपपण्हपपण्क़पपण्ख़पपण्ग़पपण्ज़प
पण्ड़पपण्ढ़पपण्फ़पपण्य़पप

पपत्कपपत्खपपत्गपपत्घपपत्ङपपत्चपपत्छप
पत्जपपत्झपपत्ञपपत्टपपत्ठपपत्डपपत्ढपपत्णप
पत्तपपत्थपपत्दपपत्धपपत्नपपत्ऩपपत्पपपत्फप
पत्बपपत्भपपत्मपपत्यपपत्रपपत्ऱपपत्लपपत्ळप
पत्ऴपपत्वपपत्शपपत्षपपत्सपपत्हपपत्क़पपत्ख़प
पत्ग़पपत्ज़पपत्ड़पपत्ढ़पपत्फ़पपत्य़पप

पपथ्कपपथ्खपपथ्गपपथ्घपपथ्ङपपथ्चपपथ्छप
पथ्जपपथ्झपपथ्ञपपथ्टपपथ्ठपपथ्डपपथ्ढप
पथ्णपपथ्तपपथ्थपपथ्दपपथ्धपपथ्नपपथ्ऩप
पथ्पपपथ्फपपथ्बपपथ्भपपथ्मपपथ्यपपथ्रप
पथ्ऱपपथ्लपपथ्ळपपथ्ऴपपथ्वपपथ्शपपथ्षप
पथ्सपपथ्हपपथ्क़पपथ्ख़पपथ्ग़पपथ्ज़पपथ्ड़प
पथ्ढ़पपथ्फ़पपथ्य़पप

पपद्कपपद्खपपद्गपपद्घपपद्ङपपद्चप
पद्छपपद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठप
पद्डपपद्ढपपद्णपपद्तपपद्थपपद्दपपद्धप
पद्नपपद्ऩपपद्पपपद्फपपद्बपपद्भपपद्मप
पद्यपपद्रपपद्ऱपपद्लपपद्ळपपद्ऴपपद्वप
पद्शपपद्षपपद्सपपद्हपपद्क़पपद्ख़प
पद्ग़पपद्ज़पपद्ड़पपद्ढ़पपद्फ़पपद्य़पप

पपध्कपपध्खपपध्गपपध्घपपध्ङपपध्चप
पध्छपपध्जपपध्झपपध्ञपपध्टपपध्ठपपध्डप
पध्ढपपध्णपपध्तपपध्थपपध्दपपध्धपपध्नप
पध्ऩपपध्पपपध्फपपध्बपपध्भपपध्मपपध्यप
पध्रपपध्ऱपपध्लपपध्ळपपध्ऴपपध्वपपध्शप
पध्षपपध्सपपध्हपपध्क़पपध्ख़पपध्ग़पपध्ज़प
पध्ड़पपध्ढ़पपध्फ़पपध्य़पप

पपन्कपपन्खपपन्गपपन्घपपन्ङपपन्चपपन्छप
पन्जपपन्झपपन्ञपपन्टपपन्ठपपन्डपपन्ढप
पन्णपपन्तपपन्थपपन्दपपन्धपपन्नपपन्ऩपपन्पप
पन्फपपन्बपपन्भपपन्मपपन्यपपन्रपपन्ऱपपन्लप
पन्ळपपन्ऴपपन्वपपन्शपपन्षपपन्सपपन्हपपन्क़प
पन्ख़पपन्ग़पपन्ज़पपन्ड़पपन्ढ़पपन्फ़पपन्य़पप

पपऩ्कपपऩ्खपपऩ्गपपऩ्घपपऩ्ङपपऩ्चपपऩ्छप
पऩ्जपपऩ्झपपऩ्ञपपऩ्टपपऩ्ठपपऩ्डपपऩ्ढप
पऩ्णपपऩ्तपपऩ्थपपऩ्दपपऩ्धपपऩ्नपपऩ्ऩपपऩ्पप
पपऩ्फपपऩ्बपपऩ्भपपऩ्मपपऩ्यपपऩ्रपपऩ्ऱपपऩ्लप
पऩ्ळपपऩ्ऴपपऩ्वपपऩ्शपपऩ्षपपऩ्सपपऩ्हपपऩ्क़प
पऩ्ख़पपऩ्ग़पपऩ्ज़पपऩ्ड़पपऩ्ढ़पपऩ्फ़पपऩ्य़पप

पपप्कपपप्खपपप्गपपप्घपपप्ङपपप्चपपप्छप
पप्जपपप्झपपप्ञपपप्टपपप्ठपपप्डपपप्ढपपप्णप
पप्तपपप्थपपप्दपपप्धपपप्नपपप्ऩपपप्पपपप्फप
पप्बपपप्भपपप्मपपप्यपपप्रपपप्ऱपपप्लपपप्ळप
पप्ऴपपप्वपपप्शपपप्षपपप्सपपप्हपपप्क़पपप्ख़प
पप्ग़पपप्ज़पपप्ड़पपप्ढ़पपप्फ़पपप्य़पप

पपफ्कपपफ्खपपफ्गपपफ्घपपफ्ङपपफ्चप
पफ्छपपफ्जपपफ्झपपफ्ञपपफ्टपपफ्ठपपफ्डप
पफ्ढपपफ्णपपफ्तपपफ्थपपफ्दपपफ्धपपफ्नप
पफ्ऩपपफ्पपपफ्फपपफ्बपपफ्भपपफ्मपपफ्यप
पफ्रपपफ्ऱपपफ्लपपफ्ळपपफ्ऴपपफ्वपपफ्शप
पफ्षपपफ्सपपफ्हपपफ्क़पपफ्ख़पपफ्ग़पपफ्ज़प
पफ्ड़पपफ्ढ़पपफ्फ़पपफ्य़पप

पपब्कपपब्खपपब्गपपब्घपपब्ङपपब्चपपब्छप
पब्जपपब्झपपब्ञपपब्टपपब्ठपपब्डपपब्ढपपब्णप
पब्तपपब्थपपब्दपपब्धपपब्नपपब्ऩपपब्पपपब्फप
पब्बपपब्भपपब्मपपब्यपपब्रपपब्ऱपपब्लपपब्ळप
पब्ऴपपब्वपपब्शपपब्षपपब्सपपब्हपपब्क़पपब्ख़प
पब्ग़पपब्ज़पपब्ड़पपब्ढ़पपब्फ़पपब्य़पप

पपभ्कपपभ्खपपभ्गपपभ्घपपभ्ङपपभ्चपपभ्छप
पभ्जपपभ्झपपभ्ञपपभ्टपपभ्ठपपभ्डपपभ्ढप
पभ्णपपभ्तपपभ्थपपभ्दपपभ्धपपभ्नपपभ्ऩप
पभ्पपपभ्फपपभ्बपपभ्भपपभ्मपपभ्यपपभ्रप
पभ्ऱपपभ्लपपभ्ळपपभ्ऴपपभ्वपपभ्शपपभ्षप
पभ्सपपभ्हपपभ्क़पपभ्ख़पपभ्ग़पपभ्ज़पपभ्ड़प
पभ्ढ़पपभ्फ़पपभ्य़पप

पपम्कपपम्खपपम्गपपम्घपपम्ङपपम्चपपम्छप
पम्जपपम्झपपम्ञपपम्टपपम्ठपपम्डपपम्ढप
पम्णपपम्तपपम्थपपम्दपपम्धपपम्नपपम्ऩपपम्पप
पम्फपपम्बपपम्भपपम्मपपम्यपपम्रपपम्ऱपपम्लप
पम्ळपपम्ऴपपम्वपपम्शपपम्षपपम्सपपम्हप
पम्क़पपम्ख़पपम्ग़पपम्ज़पपम्ड़पपम्ढ़पपम्फ़प
पम्य़पप

पपय्कपपय्खपपय्गपपय्घपपय्ङपपय्चपपय्छप
पय्जपपय्झपपय्ञपपय्टपपय्ठपपय्डपपय्ढप
पय्णपपय्तपपय्थपपय्दपपय्धपपय्नपपय्ऩपपय्पप
पय्फपपय्बपपय्भपपय्मपपय्यपपय्रपपय्ऱपपय्लप
पय्ळपपय्ऴपपय्वपपय्शपपय्षपपय्सपपय्हप
पय्क़पपय्ख़पपय्ग़पपय्ज़पपय्ड़पपय्ढ़पपय्फ़प
पय्य़पप

पपर्कपपर्खपपर्गपपर्घपपर्ङपपर्चपपर्छपपर्जप
पर्झपपर्ञपपर्टपपर्ठपपर्डपपर्ढपपर्णपपर्तपपर्थप
पर्दपपर्धपपर्नपपर्ऩपपर्पपपर्फपपर्बपपर्भपपर्मप
पर्यपपर्रपपर्ऱपपर्लपपर्ळपपर्ऴपपर्वपपर्शप
पर्षपपर्सपपर्हपपर्क़पपर्ख़पपर्ग़पपर्ज़पपर्ड़पपर्ढ़प
पर्फ़पपर्य़पप

पपऱ्कपपऱ्खपपऱ्गपपऱ्घपपऱ्ङपपऱ्चपपऱ्छप
पऱ्जपपऱ्झपपऱ्ञपपऱ्टपपऱ्ठपपऱ्डपपऱ्ढपपऱ्णप
पऱ्तपपऱ्थपपऱ्दपपऱ्धपपऱ्नपपऱ्ऩपपऱ्पपपऱ्फप
पऱ्बपपऱ्भपपऱ्मपपऱ्यपपऱ्रपपऱ्ऱपपऱ्लपपऱ्ळप
पऱ्ऴपपऱ्वपपऱ्शपपऱ्षपपऱ्सपपऱ्हपपऱ्क़पपऱ्ख़प
पऱ्ग़पपऱ्ज़पपऱ्ड़पपऱ्ढ़पपऱ्फ़पपऱ्य़पप

पपल्कपपल्खपपल्गपपल्घपपल्ङपपल्चपपल्छप
पल्जपपल्झपपल्ञपपल्टपपल्ठपपल्डपपल्ढप
पल्णपपल्तपपल्थपपल्दपपल्धपपल्नपपल्ऩप
पल्पपपल्फपपल्बपपल्भपपल्मपपल्यपपल्रप
पल्ऱपपल्लपपल्ळपपल्ऴपपल्वपपल्शपपल्षप
पल्सपपल्हपपल्क़पपल्ख़पपल्ग़पपल्ज़पपल्ड़प
पल्ढ़पपल्फ़पपल्य़पप

पपळ्कपपळ्खपपळ्गपपळ्घपपळ्ङपपळ्चप
पळ्छपपळ्जपपळ्झपपळ्ञपपळ्टपपळ्ठप
पळ्डपपळ्ढपपळ्णपपळ्तपपळ्थपपळ्दप
पळ्धपपळ्नपपळ्ऩपपळ्पपपळ्फपपळ्बप
पळ्भपपळ्मपपळ्यपपळ्रपपळ्ऱपपळ्लपपळ्ळप
पळ्ऴपपळ्वपपळ्शपपळ्षपपळ्सपपळ्हप
पळ्क़पपळ्ख़पपळ्ग़पपळ्ज़पपळ्ड़प
पळ्ढ़पपळ्फ़पपळ्य़पप

पपऴ्कपपऴ्खपपऴ्गपपऴ्घपपऴ्ङपपऴ्चप
पऴ्छपपऴ्जपपऴ्झपपऴ्ञपपऴ्टपपऴ्ठप
पऴ्डपपऴ्ढपपऴ्णपपऴ्तपपऴ्थपपऴ्दप
पऴ्धपपऴ्नपपऴ्ऩपपऴ्पपपऴ्फपपऴ्बप
पऴ्भपपऴ्मपपऴ्यपपऴ्रपपऴ्ऱपपऴ्लप
पऴ्ळपपऴ्ऴपपऴ्वपपऴ्शपपऴ्षपपऴ्सप
पऴ्हपपऴ्क़पपऴ्ख़पपऴ्ग़पपऴ्ज़पपऴ्ड़प
पऴ्ढ़पपऴ्फ़पपऴ्य़पप

पपव्कपपव्खपपव्गपपव्घपपव्ङपपव्चपपव्छप
पव्जपपव्झपपव्ञपपव्टपपव्ठपपव्डपपव्ढपपव्णप
पव्तपपव्थपपव्दपपव्धपपव्नपपव्ऩपपव्पपपव्फप
पव्बपपव्भपपव्मपपव्यपपव्रपपव्ऱपपव्लपपव्ळप
पव्ऴपपव्वपपव्शपपव्षपपव्सपपव्हपपव्क़प
पव्ख़पपव्ग़पपव्ज़पपव्ड़पपव्ढ़पपव्फ़पपव्य़पप

पपश्कपपश्खपपश्गपपश्घपपश्ङपपश्चपपश्छप
पश्जपपश्झपपश्ञपपश्टपपश्ठपपश्डपपश्ढप
पश्णपपश्तपपश्थपपश्दपपश्धपपश्नपपश्ऩप
पश्पपपश्फपपश्बपपश्भपपश्मपपश्यपपश्रप
पश्ऱपपश्लपपश्ळपपश्ऴपपश्वपपश्शपपश्षप
पश्सपपश्हपपश्क़पपश्ख़पपश्ग़पपश्ज़पपश्ड़प
पश्ढ़पपश्फ़पपश्य़पप

पपष्कपपष्खपपष्गपपष्घपपष्ङपपष्चपपष्छप
पष्जपपष्झपपष्ञपपष्टपपष्ठपपष्डपपष्ढपपष्णप
पष्तपपष्थपपष्दपपष्धपपष्नपपष्ऩपपष्पपपष्फप
पष्बपपष्भपपष्मपपष्यपपष्रपपष्ऱपपष्लपपष्ळप
पष्ऴपपष्वपपष्शपपष्षपपष्सपपष्हपपष्क़प
पष्ख़पपष्ग़पपष्ज़पपष्ड़पपष्ढ़पपष्फ़पपष्य़पप

पपस्कपपस्खपपस्गपपस्घपपस्ङपपस्चप
पस्छपपस्जपपस्झपपस्ञपपस्टपपस्ठपपस्डप
पस्ढपपस्णपपस्तपपस्थपपस्दपपस्धपपस्नप
पस्ऩपपस्पपपस्फपपस्बपपस्भपपस्मपपस्यप
पस्रपपस्ऱपपस्लपपस्ळपपस्ऴपपस्वपपस्शप
पस्षपपस्सपपस्हपपस्क़पपस्ख़पपस्ग़पपस्ज़प
पस्ड़पपस्ढ़पपस्फ़पपस्य़पप

पपह्कपपह्खपपह्गपपह्घपपह्ङपपह्चपपह्छप
पह्जपपह्झपपह्ञपपह्टपपह्ठपपह्डपपह्ढप
पह्णपपह्तपपह्थपपह्दपपह्धपपह्नपपह्ऩपपह्पप
पह्फपपह्बपपह्भपपह्मपपह्यपपह्रपपह्ऱपपह्लप
पह्ळपपह्ऴपपह्वपपह्शपपह्षपपह्सपपह्हप
पह्क़पपह्ख़पपह्ग़पपह्ज़पपह्ड़पपह्ढ़प
पह्फ़पपह्य़पप

पपक्ष्कपपक्ष्खपपक्ष्गपपक्ष्घपपक्ष्ङपपक्ष्चप
पक्ष्छपपक्ष्जपपक्ष्झपपक्ष्ञपपक्ष्टपपक्ष्ठपपक्ष्डप
पक्ष्ढपपक्ष्णपपक्ष्तपपक्ष्थपपक्ष्दपपक्ष्धपपक्ष्नप
पक्ष्पपपक्ष्फपपक्ष्बपपक्ष्भपपक्ष्मपप पपक्ष्यपपक्ष्लप
पक्ष्ळपपक्ष्पपवपपक्ष्शपप पपक्ष्षपपक्ष्सपपक्ष्हपप

पपङ्कपपङ्खपपङ्गपपङ्घपपङ्ङपपङ्चप
पङ्छपपङ्जपपङ्झपपङ्ञपपङ्टपपङ्ठपपङ्डप
पङ्ढपपङ्णपपङ्तपपङ्थपपङ्दपपङ्धपपङ्नपपङ्पप
पङ्फपपङ्बपपङ्भपपङ्मपप पपङ्यपपङ्लपपङ्ळप
पङ्पपवपपङ्शपप पपङ्षपपङ्सपपङ्हपप

less common half-forms

पपद्द्कपपद्द्खपपद्द्गपपद्द्घपपद्द्ङपपद्द्चपपद्द्छप
पद्द्जपपद्द्झपपद्द्ञपपद्द्टपपद्द्ठपपद्द्डपपद्द्ढप
पद्द्णपपद्द्तपपद्द्थपपद्द्दपपद्द्धपपद्द्नपपद्द्पप
पद्द्फपपद्द्बपपद्द्भपपद्द्मपप पपद्द्यपपद्द्लप
पद्द्ळपपद्द्पपवपपद्द्शपप पपद्द्षपपद्द्सपपद्द्हपप

पपद्ध्कपपद्ध्खपपद्ध्गपपद्ध्घपपद्ध्ङपपद्ध्चपपद्ध्छप
पद्ध्जपपद्ध्झपपद्ध्ञपपद्ध्टपपद्ध्ठपपद्ध्डपपद्ध्ढप
पद्ध्णपपद्ध्तपपद्ध्थपपद्ध्दपपद्ध्धपपद्ध्नपपद्ध्पप
पद्ध्फपपद्ध्बपपद्ध्भपपद्ध्मपप पपद्ध्यपपद्ध्लप
पद्ध्ळपपद्ध्पपवपपद्ध्शपप पपद्ध्षपपद्ध्सपपद्ध्हपप

पपद्कपपद्खपपद्गपपद्घपपद्ङपपद्चपपद्छप
पद्जपपद्झपपद्ञपपद्टपपद्ठपपद्डपपद्ढप
पद्णपपद्तपपद्थपपद्दपपद्धपपद्नपपद्पप
पद्फपपद्बपपद्भपपद्मपप पपद्यपपद्लप
पद्ळपपद्पपवपपद्शपप पपद्षपपद्सपपद्हपप

पपक्र्कपपक्र्खपपक्र्गपपक्र्घपपक्र्ङपपक्र्चप
पक्र्छपपक्र्जपपक्र्झपपक्र्ञपपक्र्टपपक्र्ठप
पक्र्डपपक्र्ढपपक्र्णपपक्र्तपपक्र्थपपक्र्दप
पक्र्धपपक्र्नपपक्र्पपपक्र्फपपक्र्बपपक्र्भपपक्र्मप
पपक्र्यपपक्र्लपपक्र्ळपपक्र्पपवपपक्र्शप
पपक्र्षपपक्र्सपपक्र्हपप

पपख्र्कपपख्र्खपपख्र्गपपख्र्घपपख्र्ङपपख्र्चप
पख्र्छपपख्र्जपपख्र्झपपख्र्ञपपख्र्टपपख्र्ठप
पख्र्डपपख्र्ढपपख्र्णपपख्र्तपपख्र्थपपख्र्दपपख्र्धप
पख्र्नपपख्र्पपपख्र्फपपख्र्बपपख्र्भपपख्र्मप
पख्र्यपपख्र्लपपख्र्ळपपख्र्पपवपपख्र्शप
पख्र्षपपख्र्सपपख्र्हपप

पपग्र्कपपग्र्खपपग्र्गपपग्र्घपपग्र्ङपपग्र्चपपग्र्छप
पग्र्जपपग्र्झपपग्र्ञपपग्र्टपपग्र्ठपपग्र्डपपग्र्ढप
पग्र्णपपग्र्तपपग्र्थपपग्र्दपपग्र्धपपग्र्नपपग्र्पप
पग्र्फपपग्र्बपपग्र्भपपग्र्मपप पपग्र्यपपग्र्लपपग्र्ळप
पग्र्पपवपपग्र्शपप पपग्र्षपपग्र्सपपग्र्हपप

पपघ्र्कपपघ्र्खपपघ्र्गपपघ्र्घपपघ्र्ङपपघ्र्चपपघ्र्छप
पघ्र्जपपघ्र्झपपघ्र्ञपपघ्र्टपपघ्र्ठपपघ्र्डपपघ्र्ढप
पघ्र्णपपघ्र्तपपघ्र्थपपघ्र्दपपघ्र्धपपघ्र्नपपघ्र्पप
पघ्र्फपपघ्र्बपपघ्र्भपपघ्र्मपप पपघ्र्यपपघ्र्लपपघ्र्ळप
पघ्र्पपवपपघ्र्शपप पपघ्र्षपपघ्र्सपपघ्र्हपप

पपच्र्कपपच्र्खपपच्र्गपपच्र्घपपच्र्ङपपच्र्चपपच्र्छप
पच्र्जपपच्र्झपपच्र्ञपपच्र्टपपच्र्ठपपच्र्डपपच्र्ढप
पच्र्णपपच्र्तपपच्र्थपपच्र्दपपच्र्धपपच्र्नपपच्र्पप
पच्र्फपपच्र्बपपच्र्भपपच्र्मपपच्र्यपपच्र्लपपच्र्ळप
पच्र्पपवपपच्र्शपपच्र्षपपच्र्सपपच्र्हपप

पपज्र्कपपज्र्खपपज्र्गपपज्र्घपपज्र्ङपपज्र्चपपज्र्छप
पज्र्जपपज्र्झपपज्र्ञपपज्र्टपपज्र्ठपपज्र्डपपज्र्ढप
पज्र्णपपज्र्तपपज्र्थपपज्र्दपपज्र्धपपज्र्नपपज्र्पप
पज्र्फपपज्र्बपपज्र्भपपज्र्मपपज्र्यपपज्र्लप
पज्र्ळपपज्र्पपवपपज्र्शपपज्र्षपपज्र्सपपज्र्हपप

पपङ्र्कपपङ्र्खपपङ्र्गपपङ्र्घपपङ्र्ङपपङ्र्चप
पङ्र्छपपङ्र्जपपङ्र्झपपङ्र्ञपपङ्र्टपपङ्र्ठपपङ्र्डप
पङ्र्ढपपङ्र्णपपङ्र्तपपङ्र्थपपङ्र्दपपङ्र्धपपङ्र्नप
पङ्र्पपपङ्र्फपपङ्र्बपपङ्र्भपपङ्र्मपप पपङ्र्यप
पङ्र्लपपङ्र्ळपपङ्र्पपवपपङ्र्शपपङ्र्षपपङ्र्सप
पङ्र्हपप

पपञ्र्कपपञ्र्खपपञ्र्गपपञ्र्घपपञ्र्ङपपञ्र्चप
पञ्र्छपपञ्र्जपपञ्र्झपपञ्र्ञपपञ्र्टपपञ्र्ठप
पञ्र्डपपञ्र्ढपपञ्र्णपपञ्र्तपपञ्र्थपपञ्र्दपपञ्र्धप
पञ्र्नपपञ्र्पपपञ्र्फपपञ्र्बपपञ्र्भपपञ्र्मपपञ्र्यप
पञ्र्लपपञ्र्ळपपञ्र्पपवपपञ्र्शपप पपञ्र्षपपञ्र्सप
पञ्र्हपप

पपण्र्कपपण्र्खपपण्र्गपपण्र्घपपण्र्ङपपण्र्चपपण्र्छप
पण्र्जपपण्र्झपपण्र्ञपपण्र्टपपण्र्ठपपण्र्डपपण्र्ढप
पण्र्णपपण्र्तपपण्र्थपपण्र्दपपण्र्धपपण्र्नपपण्र्पप
पण्र्फपपण्र्बपपण्र्भपपण्र्मपप पपण्र्यपपण्र्लप
पण्र्ळपपण्र्पपवपपण्र्शपप पपण्र्षपपण्र्सपपण्र्हपप

पपत्र्कपपत्र्खपपत्र्गपपत्र्घपपत्र्ङपपत्र्चपपत्र्छप
पत्र्जपपत्र्झपपत्र्ञपपत्र्टपपत्र्ठपपत्र्डपपत्र्ढपपत्र्णप
पत्र्तपपत्र्थपपत्र्दपपत्र्धपपत्र्नपपत्र्पपपत्र्फपपत्र्बप
पत्र्भपपत्र्मपप पपत्र्यपपत्र्लपपत्र्ळपपत्र्पपवप
पत्र्शपपत्र्षपपत्र्सपपत्र्हपप

पपथ्र्कपपथ्र्खपपथ्र्गपपथ्र्घपपथ्र्ङपपथ्र्चपपथ्र्छप
पथ्र्जपपथ्र्झपपथ्र्ञपपथ्र्टपपथ्र्ठपपथ्र्डपपथ्र्ढप
पथ्र्णपपथ्र्तपपथ्र्थपपथ्र्दपपथ्र्धपपथ्र्नपपथ्र्पप
पथ्र्फपपथ्र्बपपथ्र्भपपथ्र्मपप पपथ्र्यपपथ्र्लप
पथ्र्ळपपथ्र्पपवपपथ्र्शपप पपथ्र्षपपथ्र्सपपथ्र्हपप

पपध्र्कपपध्र्खपपध्र्गपपध्र्घपपध्र्ङपपध्र्चपपध्र्छप
पध्र्जपपध्र्झपपध्र्ञपपध्र्टपपध्र्ठपपध्र्डपपध्र्ढप
पध्र्णपपध्र्तपपध्र्थपपध्र्दपपध्र्धपपध्र्नपपध्र्पप
पध्र्फपपध्र्बपपध्र्भपपध्र्मपप पपध्र्यपपध्र्लप
पध्र्ळपपध्र्पपवपपध्र्शपप पपध्र्षपपध्र्सपपध्र्हपप

पपन्र्कपपन्र्खपपन्र्गपपन्र्घपपन्र्ङपपन्र्चपपन्र्छप
पन्र्जपपन्र्झपपन्र्ञपपन्र्टपपन्र्ठपपन्र्डपपन्र्ढप
पन्र्णपपन्र्तपपन्र्थपपन्र्दपपन्र्धपपन्र्नपपन्र्पपपन्र्फप
पन्र्बपपन्र्भपपन्र्मपप पपन्र्यपपन्र्लपपन्र्ळपपन्र्पप
वपपन्र्शपप पपन्र्षपपन्र्सपपन्र्हपप

पपप्र्कपपप्र्खपपप्र्गपपप्र्घपपप्र्ङपपप्र्चपपप्र्छप
पप्र्जपपप्र्झपपप्र्ञपपप्र्टपपप्र्ठपपप्र्डपपप्र्ढपपप्र्णप
पप्र्तपपप्र्थपपप्र्दपपप्र्धपपप्र्नपपप्र्पपपप्र्फपपप्र्बप
पप्र्भपपप्र्मपप पपप्र्यपपप्र्लपपप्र्ळपपप्र्पपवप
पप्र्शपप पपप्र्षपपप्र्सपपप्र्हपप

पपप्रकपपप्रखपपप्रगपपप्रघपपप्रङपपप्रचप
पप्रछपपप्रजपपप्रझपपप्रञपपप्रटपपप्रठप
पप्रडपपप्रढपपप्रणपपप्रतपपप्रथपपप्रदपपप्रधप
पप्रनपपप्रपपपप्रफपपप्रबपपप्रभपपप्रमपप
पपप्रयपपप्रलपपप्रळपपप्रपपवपपप्रशपप
पपप्रषपपप्रसपपप्रहपप

पपब्रकपपब्रखपपब्रगपपब्रघपपब्रङपपब्रचपपब्रछप
पब्रजपपब्रझपपब्रञपपब्रटपपब्रठपपब्रडपपब्रढप
पब्रणपपब्रतपपब्रथपपब्रदपपब्रधपपब्रनपपब्रपपपब्रफप
पब्रबपपब्रभपपब्रमपप पपब्रयपपब्रलपपब्रळपपब्रपव
पपब्रशपप पपब्रषपपब्रसपपब्रहपप